प्रस्तुतकर्ता

सन्तोष कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर - संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- संस्कृत

नई शिक्षा नीति - 2020

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर(मेजर)

इकाई -1/4

शीर्षक - संस्कृत वांङ्गमय में ज्ञान विज्ञान एवं राष्ट्र गौरव

उपशीर्षक- वैदिक एवं लौकिक दर्शन में राष्ट्र गौरव

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

संस्कृत वांग्मय में राष्ट्र गौरव

भारत की संपूर्ण सांस्कृतिक ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक सामाजिक और राजनीतिक विकास के सोपानों की व्याख्या संस्कृत वाङ्गमय के माध्यम से हमारे समक्ष उपलब्ध है। सहस्राब्दी से इस भाषा और इसके वाङ्गमय को भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली है । भारत को सांस्कृतिक और भावात्मक एकता को बांधने में संस्कृत वाङ्गमय ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसी कारण से भारतीय मनीषियों ने इस भाषा को देववाणी नाम से सम्मानित किया है तथा संस्कृत वाङ्गमय के महत्व एवं उसके गौरव को संपूर्ण राष्ट्र तक पहुंचाने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया है ।

सांस्कृतिक दृष्टि से वाल्मीकि के रामायण तथा व्यास के महाभारत को भारत में सर्वोच्च प्रतिष्ठा रही। महाभारत का उपलब्ध स्वरूप एक लाख पद्यों में है। वाल्मीकि रामायण आदि लौकिक महाकाव्य है उसकी गणना आज भी विश्व के उच्चतम काव्यों में की जाती है। संस्कृत में पुराण उपपुराण जैसे महा विशाल वाङ्गमय हैं जो भारतीय संस्कृति को एक सूत्र में आबद्ध किये हैं। इसमें भारतीय दर्शन भूगोल एवं खगोल ,गणित ,ज्योतिष, वास्तु, योग ,आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, विज्ञान संगीत इत्यादि का वृहद विवेचन मिलता है निश्चित रूप से पूर्ण विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि संस्कृत वाङ्गमय हमारे राष्ट्र का गौरव है।

भारतीय दर्शन का आरम्भ वेदों से होता है। वेद भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य के मूल स्रोत हैं। अनेक दर्शन, सम्प्रदाय वेदों को अपना आधार मानते हैं। भारत में दर्शन उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का ज्ञान हो सके। दर्शन का अर्थ है तत्वज्ञान । तत्वज्ञान कराने के लिए ही भारत में दर्शन का जन्म हुआ । दर्शन शब्द अंग्रेजी भाषा के फिलॉसफी जिसका अर्थ है ज्ञानानुराग । वस्तुतः जीवन के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण ही दर्शन है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग हुआ करता है सभी दर्शन दुख निवृत्ति के उपायों के अन्वेषण में लगे हुए हैं आध्यात्मिक अधिदैविक और अधिभौतिक दुःखों से प्राणी ग्रस्त है दुखों के बंधन से निवृत्ति को दार्शनिक भाषा में मोक्ष के नाम से जाना जाता है।

प्राचीन भारतीय दार्शनिक परम्परा नौ दार्शनिक विचारधारा या संप्रदाय को मानती है जिसमें कि आस्तिक दर्शन मे न्याय, वैशेषिक, योग, मीमांसा, सांख्य, वेदांत माने जाते हैं। तीन नास्तिक दर्शन माने जाते हैं बौद्ध, चार्वाक तथा जैन।

सांख्य दर्शन सांख्य दर्शन के प्रमुख आचार्य कपिल हैं। इसके तीन ग्रंथ सांख्यकारिका, तत्व समास तथा सांख्य प्रवचन उपलब्ध हैं। इसमें प्रकृति और पुरुष के संयोग से सृष्टि को माना गया है।सांख्य मे कुल 25 तत्व माना गया है। जिनमें प्रकृति को जड़, प्रधान, अव्यक्त विकारशील आदि नामों से जाना जाता है। पुरुष को चेतन, नित्य, द्रष्टा, भोक्ता माना जाता है।प्रकृति तथा पुरुष का सहयोग लंगड़े तथा अंधे के समान है। पुरुष को लंगड़ा तथा प्रकृति प्रकृति को अंधा बताया गया है ।

योग दर्शन योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि माने जाते हैं। योग और सांख्य में अंतर मात्र इतना है कि इसमें ईश्वर को मिलाकर 26 पदार्थ स्वीकार किया जाता है सांख्य तथा योग दर्शन दोनों में सत्कार्यवादा का सिद्धांत है।

न्याय दर्शन दर्शनशास्त्र में बुद्धि को तीव्र तथा विशद मानता है इसके लिए अन्वीक्षिकी शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसके प्रवर्तक महर्षि गौतम को माना जाता है ।यह 16 पदार्थ स्वीकार करता है सृष्टिकर्ता, पालक तथा संहारक के रूप में यह ईश्वर को मानता है।

वैशेषिक दर्शन वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद को माना जाता है यह सात पदार्थ एवं नव द्रव्यों को स्वीकार करता है ।**मीमांसा दर्शन** के प्रवर्तक आचार्य जैमिनी माने जाते हैं इसमें वेदों के कर्मकांड की व्याख्या की गई है। मीमांसक सृष्टि के विषय में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते बल्कि सृष्टि को अनादि मानते हैं।

वेदांत दर्शन वेदांत दर्शन का वर्ण्य विषय उपनिषद् है। इसका ग्रंथ वेदांत सूत्र या ब्रह्म सूत्र है जो 555 सूत्रों में निबद्ध है ।इसके रचयिता बादरायण माने जाते हैं इसमें ब्रह्म, जीव, आत्मा, माया, अविद्या इत्यादि का विवेचन है । विज्ञानियों, मनोमयकोष, प्राणमयकोष इन तीन कोषों को ही शरीर के रूप में जाना जाता है।

नास्तिक दर्शनों में प्रमुख है चार्वाक दर्शन चार्वाक दर्शन ।चार्वाक दर्शन के प्रमुख आचार्य बृहस्पति माने जाते हैं इस दर्शन का कोई भी मौलिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है ।

जैन दर्शन- जैन दर्शन भी नास्तिक माना जाता है इनके यहां 24 तीर्थंकर माने जाते हैं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी है।

बौद्ध दर्शन -बौद्ध दर्शन के प्रवर्तक गौतम बुद्ध को माना जाता है जिन्होंने राज्य त्याग कर सन्यास ग्रहण कर लिया था कठोर तपस्या से ज्ञान प्राप्त किया जनसाधारण के दुखों की निवृत्ति में जीवन भर उपदेश करते रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास डॉ कपिल देव द्विवेदी।

2- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास राधावल्लभ त्रिपाठी।

3- संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास विनय कुमार राय ।